thearyasamaj.org

प्रकाशन की तिथि 01.4.2015

ओ३म्

एक प्रति मूल्य : रु० 4.00

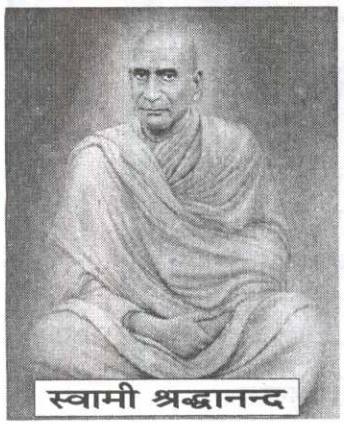

शुद्धि समाचार

सन् 1923 में स्वामी श्रद्धानन्द जी द्वारा स्थापित

भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा का मासिक मुखपत्र

माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः । अथर्ववेद 12.1.12

भूमि मेरी माता है और मैं उस मातृभूमि का पुत्र हूँ।

वर्ष 38 अंक 04

"शुद्धि ही हिन्दू जाति का जीवन है"

वार्षिक शुल्क : 50 रुपये

आजीवन शुल्क : 300 रुपये

अप्रैल, 2015 विक्रम सम्वत् 2071 चैत्र-वैशाख

सनातन धर्मी नेता – पं. मदनमोहन मालवीय

दूरभाष : 011-23847244

परामर्शदाता : श्री हरबंस लाल कोहली ☼ श्री विजय गुप्त ☼ श्री सुरेन्द्र गुप्त ☼ प्रबन्धक : श्री नरेन्द्र मोहन वलेचा

आर्य ससाज की सौ मान्यताऐं

ईश्वर

1. ईश्वर एक ही है एवं निराकार है।
2. ईश्वर सच्चिदानन्द स्वरूप है।
3. ईश्वर सृष्टि का रचयिता है, पालनकर्ता एवं संहारकर्ता है।
4. ईश्वर सर्वज्ञ, सर्वव्यापी और सर्वशक्तिमान है।
5. ईश्वर जीवों का कर्मफल प्रदाता है।
6. ईश्वर का मुख्य नाम ओम् है।
7. ईश्वर पापों को क्षमा नहीं करता है।
8. ईश्वर अवतार नहीं लेता है।

जीव (आत्मा)

9. जीव चेतन एवं अल्पज्ञ है।
10. जीव की संख्या अनन्त है।
11. जीव न कभी मरता है और न कभी उत्पन्न हुआ है।
12. आत्मा एवं शरीर के संयोग का नाम जन्म एवं वियोग का नाम मृत्यु है।
13. शरीर के नष्ट होने पर जीव नष्ट नहीं होता है।
14. जीव सत् चित् रूप है।
15. जीव अपने कर्मों के अनुसार अच्छी व बुरी योनि में जाता है।
16. जीव कर्म करने में स्वतंत्र है और फल भोगने में ईश्वर की व्यवस्था के अधीन है।
17. इच्छा, द्वेष, सुख, दुःख, प्रयत्न और ज्ञान जीव के लक्षण हैं।
18. जीव सृष्टि का निर्माण नहीं कर सकता अपितु (शरीर के माध्यम से) उसके भोग के लिए सृष्टि बनी है।

प्रकृति

19. यह भौतिक जगत प्रकृति से बना हुआ है।
20. प्रकृति छोटे-छोटे परमाणुओं का नाम है।
21. परमाणु जड़ हैं तथा ज्ञान रहित हैं।
22. परमाणु आदि और अनन्त हैं, न कभी उत्पन्न हुए और न कभी नष्ट होते हैं।
23. जब परमाणु अलग-अलग हो जाते हैं तो प्रलय हो जाती है।
24. परमाणुओं के संयोग से ईश्वर सृष्टि की रचना करता है।

वेद

25. हमारा धर्म ग्रन्थ वेद है। 'नमो वेद मात्रे' अर्थात् वेद माता को नमन ।
26 . वेद चार हैं- ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद। आदि सृष्टि में परमात्मा ने अग्नि, वायु, आदित्य और अंगिरा।
27. इन ऋषियों पर चारों वेदों का प्रकाश किया।
28. वेदों के सिद्धान्त सृष्टि नियमों के अनुकूल हैं।
29. वेदों में इतिहास नहीं है।
30. वेद स्वतः प्रमाण हैं।
31. केवल मन्त्र भाग ही वेद है, ऋषियों द्वारा रचित ब्राह्मण ग्रन्थ उनकी व्याख्या हैं।
32. वेदों के सिद्धान्त और आदर्श हर मानव के लिए हर काल के लिए (सार्वकालिक) तथा हर देश के लिए (सार्वदेशिक) हैं।
33. वेद सब सत्य विद्याओं की पुस्तक है।
34. उपवेद चार हैं - ऋग्वेद का उपवेद-आयुर्वेद, यजुर्वेद का धनुर्वेद, सामवेद का गन्धर्ववेद और अथर्ववेद का अर्थवेद है।
35. वेद संस्कृत भाषा में नहीं हैं, किन्तु देव वाणी में हैं।
36. संस्कृत भाषा वेदों की भाषा से निकली है और अन्य सब भारतीय भाषाऐं संस्कृत से।

वेदांग

37. ब्राह्मण, आरण्यक और उपनिषद् ब्राह्मण ग्रन्थों के ही भाग हैं।
38. 11 उपनिषदें मुख्य माननीय हैं-ईश, केन, कठ, प्रश्न, मुण्डक, माण्डूक्य, ऐतरेय, तैत्तिरीय, बृहदारण्यक, छान्दोग्य और श्वेताश्वतर।
39. वेदों के अर्थ को समझने के लिए जिनसे सहायता मिलती है वे वेदांग 6 हैं - शिक्षा, कल्प, ज्योतिष, व्याकरण, निरुक्त और छन्द।
40. उपांग दर्शन 6 हैं - न्याय, वैशेषिक, सांख्य, योग, वेदान्त और मीमांसा।
41. सबसे पुरानी और सबसे मानने योग्य स्मृति, मनुस्मृति ही है।
42. मुख्य ब्राह्मण ग्रन्थ ऐतरेय, शतपथ, ताण्ड्य और गोपथ हैं।

देवता

43. देवता वे कहलाते हैं जो कुछ दान करें, ज्ञान दें, प्रकाश करें, दूसरों का उपकार करें।
44. देवता दो प्रकार के होते हैं- जड़ और चेतन।
45. जड़ देवता वे हैं जो प्राण रहित हैं फिर भी संसार को लाभ पहुँचाते हैं, ये संख्या में 33 हैं- 12 आदित्य (12मास), 11 रुद्र (10 प्राण व 1 जीवात्मा), 8 वसु (5 पंचभूत व सूर्य, चन्द्र, नक्षत्र), 1 इन्द्र (विद्युत), 1 प्रजापति (यज्ञ)।
46. माता, पिता, आचार्य, अतिथि एवं विद्वान चेतन देवता हैं।
47. जो श्रेष्ठ आचार को ग्रहण कराके सब विद्याओं को पढ़ा देवे उसको आचार्य कहते हैं।
48. चेतन देवताओं की पूजा उनका आदर सत्कार तथा आज्ञा पालन करने से होती है।
49. जड़ देवताओं की पूजा हवन इत्यादि से होती है।
50. महापुरुषों की मूर्ति बन सकती है, ईश्वर की नहीं।
51. महापुरुषों के चरित्र पर आचरण करना उनकी सच्ची पूजा है।

जीवन शैली

42. माता-पिता, आचार्य, अतिथि, विद्वान ही पितर कहलाते हैं और श्रद्धापूर्वक इनकी सेवा, आदर, सत्कार, आज्ञा पालन कर इन्हें तृप्त करना ही श्राद्ध व तर्पण कहलाता है।
53. शिखा (चोटी) और सूत्र (यज्ञोपवीत) हमारी संस्कृति के मुख्य बाह्य चिन्ह हैं।
54. हमारा अभिवादन 'नमस्ते' है।
55. सात्विक विचारों के लिए शुद्ध और सात्विक आहार ही सेवनीय है।

आर्य

56. जो श्रेष्ठ स्वभाव, धर्मात्मा, परोपकारी, वेदानुकूल आचरण करने वाला है वह आर्य है।
57. संसार के सब मनुष्य आर्यों की संतान हैं।

सृष्टि

57. सबसे पहले मनुष्य की सृष्टि त्रिविष्टप अर्थात् तिब्बत में हुई। वहाँ से भूमण्डल के अन्य भागों में धीरे-धीरे फैलते गये। सृष्टि को उत्पन्न हुए (2011 में) 1 अरब 16 करोड़ 8 लाख, 43 हजार 112 वर्ष हुए लेकिन मनुष्य की उत्पत्ति बाद में हुई थी।
59. सृष्टि की कुल आयु 4 अरब 32 करोड़ वर्ष है।
60. आदि सृष्टि अमैथुनी हुई अर्थात् नर-मादा संसर्ग पर आधारित नहीं थी।
61. ईश्वर, जीव एवं प्रकृति तो गुण, धर्म, स्वभाव से अनादि हैं किन्तु सृष्टि प्रवाह से अनादि है अर्थात् सृष्टि और प्रलय का आदि-अन्त होता रहता है।

धर्म

62. धैर्य, क्षमा, मन को वश में करना, चोरी न करना, शुद्धता, इन्द्रियों का निग्रह, आत्मा-परमात्मा का ज्ञान, विद्या, सत्य, क्रोध न करना, ये धर्म के दस लक्षण हैं।
63. मनुष्य वह है जो मननशील है एवं बुद्धिपूर्वक हर कार्य को सोच विचार

शुद्धि समाचार में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण सम्बन्धित लेखक के हैं। सम्पादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

thearyasamaj.org

कर सम्पन्न करता है।

64. मनुष्य वह है जो अच्छे गुणों को धारण करके प्राणिमात्र का उपकार करते हुए मोक्ष को प्राप्त करता है।

65. धर्म मनुष्य मात्र के लिए एक होता है और वह केवल वैदिक धर्म ही है।

66. धर्म शाश्वत सिद्धान्तों पर आधारित है। वह किसी व्यक्ति विशेष का चलाया हुआ नहीं होता है।

67. मत किसी व्यक्ति विशेष की मान्यताओं पर आधारित है।

स्वर्ग–नरक

68. स्वर्ग और नरक कोई विशेष स्थान नहीं हैं। विशेष सुख और सुख की सामग्री को जीव को प्राप्त होना स्वर्ग कहलाता है।

69. विशेष दुःख और दुःख की सामग्री जीव को प्राप्त होना नरक कहलाता है।

70. जिससे जीव दुःख सागर से तर जाय वह तीर्थ है।

71. विद्याभ्यास, सुविचार, ईश्वरोपासना, धर्मानुष्ठान, सत्संग।

72. ब्रह्मचर्य, इन्द्रिय संयम आदि सब तीर्थ हैं।

73. बीते हुए का नाम भूत तथा शव का नाम ही प्रेत होता है।

सत्य

74. जो जैसा है उसे वैसा ही जानना और मानना सत्य है।

उपासना

75. जन्म, मरण, दुःख, अविद्या, संयोग, वियोग, रूप, रंग, गंध आदि गुणों से रहित परमात्मा को जान कर उसकी उपासना करना निर्गुणोपासना है।

76. सर्वज्ञ, सर्वक्तिमान, सर्वव्यापक, सच्चिदानन्द, सर्वाधार, न्यायकारी, दयालु आदि गुणों से युक्त ईश्वर की उपासना सगुणोपासना कहलाती है।

77. ज्ञान, कर्म और उपासना तीनों ही मुक्ति के लिए आवश्यक हैं।

78. ईश्वर का गुण–गान ही ईश्वर स्तुति है।

79. ईश्वर के गुण–गान के साथ उन गुणों को प्रदान करने की इच्छा व्यक्त करना ही ईश्वर की प्रार्थना है।

80. अष्टांग योग से परमात्मा के समीपस्थ होने का नाम उपासना है।

मोक्ष

81. जिससे सब बुरे काम और जन्म–मरण आदि दुःख सागर से छूट कर आनन्द स्वरूप परमेश्वर को प्राप्त हो के आनन्द ही में रहना है वह मोक्ष या मुक्ति कहलाती है।

82. मुक्ति में जीव ईश्वर में लय नहीं होता है।

83. 31 नील 10 खरब 40 अरब वर्षों तक ब्रह्मानन्द प्राप्त कर जीव मुक्ति से पुनः संसार में आता है।

84. मानव अष्टांग योग अर्थात् यम (अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह), नियम (शौच, सन्तोष, तप, स्वाध्याय, ईश्वर प्रणिधान,) आसन प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान एवं समाधि के द्वारा शारीरिक, मानसिक एवं आध्यात्मिक उन्नति करता हुआ ईश्वर को प्राप्त कर सकता है।

यज्ञ व संस्कार

85. प्रतिदिन प्रातःकाल और सायंकाल दो बार संधिबेला में परमात्मा का ध्यान करना ही संध्या है।

86. प्रत्येक मनुष्य को पंच महायज्ञ प्रतिदिन करने चाहिए– ब्रह्मयज्ञ अर्थात् संध्या, देवयज्ञ अर्थात् हवन, पितृयज्ञ अर्थात् माता–पिता, गुरुजनों की सेवा करना, बलिवैश्वदेव यज्ञ अर्थात् दीन, अनाथ, गाय आदि को भोजन देना, अतिथि यज्ञ अर्थात् घर पर आये हुए विद्वान्, उपदेशक, महात्माओं की सेवा करना।

87. जीवन को उत्तम बनाने के लिए गर्भाधान, पुंसवन, सीमान्तोन्नयन, जातकर्म, नामकरण, अन्नप्रशान, मुण्डन, कर्णवेध, उपनयन, वेदारम्भ, समावर्तन, विवाह, वानप्रस्थ, संन्यास एवं अन्त्येष्टि ये सोलह संस्कार आवश्यक हैं।

वर्ण एवं आश्रम

88. जो गुण, कर्म और स्वभाव के योग से ग्रहण किया जाता है वर्ण कहलाता है।

89. वर्ण चार हैं–ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र ।

90. जाति जन्म से मरण पर्यन्त एक ही बनी रहती है जैसे मनुष्य, घोड़ा, गाय आदि।

91. साधारण रीति से मनुष्य की आयु के चार भाग किये जाते हैं किसके अन्तर्गत उनका पालन हुआ वह सर्वांगीण विकास कर सकता है– ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ एवं संन्यास आश्रम।

नारी–कल्याण एवं सामाजिक सुधार

92. नारी मातृशक्ति है अतः सम्माननीय है।

93. बाल विवाह, अनमेल विवाह, सगोत्र विवाह, बहुपत्नीत्व, दहेज प्रथा, गौ हत्या, पशु बलि, नरबलि, छुआछूत, जादू–टोने आदि सामाजिक कुरीतियाँ हैं इनका उन्मूलन आवश्यक है।

94. स्त्री शिक्षा, विधवा विवाह, अन्तर्जातीय विवाह, आदि समाज सुधार के कार्यों को बढ़ावा देना चाहिए।

साधन की पवित्रता

95. धर्मयुक्त साधनों से धन कमाना चाहिए और परोपकार आदि कार्यों में उसे खर्च किया जाना चाहिए।

स्वदेश प्रेम

96. स्वराज्य, स्वभाषा, स्व–वेशभूषा आदि पर गर्व होना चाहिए।

आर्य समाज

97. आर्य समाज कोई नया मत नहीं है। यह तो सत्य सनातन वैदिक धर्म में आई वर्तमान कुरीतियों को हटाकर उसे पुनः प्रतिष्ठापित करने हेतु युग निर्माता महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा प्रारम्भ किया गया एक पवित्र आन्दोलन है।

98. आर्य समाज राम, कृष्ण आदि महापुरुषों के यथार्थ चरित्र को स्वीकार करता है एवं सभी सनातन पर्वों का शुद्ध रूप में मनाता है।

99. आर्य समाज महर्षि दयानन्द के ग्रन्थों को प्रामाणिक मानता है।

100. आर्य समाज भौतिकवाद (प्रेय मार्ग) एवं अध्यात्मवाद (श्रेय मार्ग) में समन्वय कर विश्व को सुख शान्ति एवं आनन्द के मार्ग पर अग्रसर कर मानव को धर्म, अर्थ, काम एवं मोक्ष की प्राप्ति कराने का कार्यक्रम प्रस्तुत करता है।

हिन्दी हम सबकी परिभाषा ।

कोटि, कोटि कंठों की भाषा,
जग, गण की मुखरित अभिलाषा,
हिंदी है पहचान हमारी,
हिंदी हम सबकी परिभाषा ।

आजादी के दीप्त भाल की,
बहुभाषी वसुधा विशाल की,
सहृदयता के एक सूत्र में,
यह परिभाषा देश काल की ।

निज भाषा जो स्वाभिमान को,
आम आदमी की जुबान की,
मानव गरिमा के विहान की,
अर्थ दे रही संविधान को।

जिस भाषा में देशप्रेम का,
नवोन्मेष का अलख जगाया,
ऋषि दयानंद ने वेदों का,
सार्वमौम संदेश सुनाया ।

श्रद्धानन्द जी ने कहा कि हिन्दी,
भारत का निर्माण करेगी !
मैंकॉले के अभिशापों का,
यह जनभाषा प्राण हरेगी !!

हिंदी आज चाहती हमसे –
हम सब निश्छल अतंस्तल से,
सहज विनम्र अथक यत्नों से,
मांगे न्याय आज से, कल से !!

–डॉ. लक्ष्मीमल्ल सिंघवी

कुण्डलियाँ

जाकर तू ढूँढे कहाँ,
छोड़ मूढ़ अज्ञान ।
यत्र–तत्र–सर्वत्र वे,
तनिक उन्हें पहचान।।
तनिक उन्हें पहचान,
सामने तेरे हरपल।
क्या थल क्या आकाश,
वायु क्या क्या बहता जल।
कहे नलिन हरिदास,
बैठ ले ध्यान लगाकर।
इधर उधर मत भटक,
मिलेंगे मन में जाकर।।

रक्खें विमल विचार तो,
होगा मन अकलंक।
विचरेगा जग में वही,
होकर तब निः शंक।।
होकर तब निःशंक
दोष कोई भी डाले।
फैलाकर उजियार
रहेगा उसे निकाले।
कहे नलिन हरिदास,
स्वाद अमृत का चक्खें।
जीने का कुछ हेतु,
सदा जीवन में रक्खें।।

भारतमाता धेनु है,
हम सब बाछी, बाछ।
हरियाली घृत, दुग्ध सम,
नदियाँ अमृत छाछ।।
नदियाँ अमृत छाछ,
करें सेवा हम इसकी ।
पूजें प्रभु के संग,
कृपा है इतनी जिसकी ।
कहे नलिन हरिदास,
यहाँ जन–जन यह गाता।
जन्म–जन्म में मिले,
हमें यह भारतमाता।।

धर्म ध्वजा फहरी रहे,
उन्नति करे स्वदेश।
संस्कृति को भूलें नहीं,
धारें पावन वेश।।
धारें पावन वेश,
ओम का हो जयकारा।
गूँजे सारा विश्व,
विश्वगुरु देश हमारा।
कहे नलिन हरिदास,
बस इतना सा है मर्म।
रखना पूरा ध्यान,
यह छूटे कहीं न धर्म ।।

–डॉ. नलिन मो. 09413987457

thearyasamaj.org

अमृत का सागर दिव्य–गौमाता

गोमाता स्वास्थ्य–सुख–मुक्तिदाता

समस्या अनेक–समाधान एक

– डॉ. बालस्वरुप गर्ग
जयपुर, फोन : 9314150134

गोमाता गोलोक से मानव का कल्याण करने कामधेनु, सुरभि, नंदनी, कपिला, बहुला, श्यामा के रूप में धरती पर आयी है।

गोमाता कभी भी पशु नहीं है। गोमाता पशु कैसे हो सकती है। गोमाता यदि पशु होती तो उसका दूध पीने पर पशु के गुण उत्पन्न होते।

मां शब्द की उत्पत्ति गोमाता के मुख से हुई है, शेर का बच्चा जब जन्म लेता है, तब दहाड़ता है, हाथी का बच्चा जब जन्म लेता है, तब चिंघाडता है, घोडे का बच्चा जब जन्म लेता है, तब हिनहिनाता है, बकरी का बच्चा जब जन्म लेता है, तब रोता है। लेकिन गाय का बच्चा जब जन्म लेता है तो सबसे पहले पुकारता है –अम्मा मां....।

अम्मा मां शब्द को सामाजिक प्रतिष्ठा भी गाय से मिली है। मनुष्य के बच्चे ने गाय के बच्चे को देखकर सबसे पहले मां शब्द पुकारा था। जब हम अपनी मां का दूध पीते हैं तो हमारे अंदर मानव के गुण उत्पन्न होते हैं। जब हम गोमाता के दुध को पीते हैं तो हमारे अन्दर देवत्व के गुण उत्पन्न होते हैं। भगवान के गुण पैदा होते हैं।

असुर (राक्षस) मानव से पशु मानव, पशु मानव से मानव, मानव से देव मानव, देव मानव से दिव्य मानव, दिव्य मानव से भगवान, यह विकास का क्रम सिर्फ गोमाता से सम्भव है।

गोमाता हमें अंधकार से प्रकाश की ओर, अज्ञान से ज्ञान की ओर, मृत्यु से अमरत्व की ओर ले जाती हैं। गोमाता चलता–फिरता चिकित्सालय है। गोमाता के शरीर पर बहुत ही प्यार से हाथ फेरने पर हमारे रक्त चाप में परिवर्तन होने लगता है। गोमाता की पूंछ को शिर के चारों ओर फेरने पर हमारी शिरोबाधा पूरी तरह से दूर हो जाती है। गोमाता के कान में हमारी समस्या को हरने पर समाधान हो जाता है। गोमाता सूर्यपुत्री है। अतः गोमाता की सेवा करने पर मनुष्य अपने भाग्य को बदल सकता है। वेदों के अनुसार जो गतिशील है, जो गति से उत्पन्न है, वह गो है। वेद में गो के 24 अर्थ बताये गये हैं।

वेद ने गाय को विश्व की मां कहा है। सम्पूर्ण विश्व में गोमाता का ही दूध पिया जाता है। विश्व ने गोमाता के दूध में मौजूद रसायनों के कारण दूध को सात्विक, पौष्टिक, सुपाच्य एवं सम्पूर्ण आहार कहा है। धन्वतरि भगवान के अनुसार मानव के लिये गोमाता का दूध पीने हेतु अनिवार्य कहा है। राज निघण्टु के अनुसार गो माता के दूध को अमृत कहा है। वेदों के अनुसार गो प्राण तथा गो प्राणी की उत्पत्ति सूर्य से हुई है। गोमाता के दूध में सूर्य के सभी गुण मौजूद हैं। चरक संहिता के अनुसार गोमाता के दूध को सात्विक, स्वादिष्ट, ओज को बढ़ाने वाला मधुर कहा गया है। आधुनिक विज्ञान के अनुसार गाय के दूध में 22 प्रकार के अमिनों अम्ल हैं। सामान्यतः एक प्रोटीन में 21 प्रकार के अमिनों अम्ल हैं। हिस्टीडिन बच्चों के विकास के लिये आवश्यक है। मेथिओनिन अमिनों अम्ल कोलेस्ट्रोल को नियंत्रित करता है। गौ–दुग्ध में मौजूद टिप्टोफेन को इंसुलिन दिमाग के अन्दर पहुंचा देता है। गौदुग्ध का 97 प्रतिशत प्रोटीन सुपाच्य है।

अनाजों में लाइसिन और दालों में मेथीयोनिन की कमी पाई जाती है। मनुष्य शरीर में अमिनों अम्ल बन नहीं पाते हैं। गाय के दूध में मौजूद केसिन 8 प्रतिशत प्रोटीन का निर्माण करता है। दूध प्रोटीन में 4.1 कैलोरी प्रतिग्राम उर्जा मौजूद है। गोमाता के दूध में 75 कैलोरी प्रतिग्राम उर्जा मौजूद है।

गोमाता के दूध में मौजूद वसा में ओमेगा–6, ओमेगा–3, दिमाग के आकार तथा दिमाग में स्नायुओं की संख्या तक बढ़ा सकते है। सुनने तथा देखने की ताकत भी बढ़ाते है। वसा शरीर में उष्णता पहुचांते हैं और पाचन शक्ति को बढ़ाते हैं। गौ के दूध में मौजूद वसा अन्य सभी स्त्रोतों से प्राप्त वसाओं से भौतिक और रासायनिक दृष्टि से काफी भिन्न है। गोमाता के दूध में कम अणुभार वाले वसा अम्ल अधिक पाये जाते हैं। लीनोलेइक और लीनोलेनिक और अरैचिडानिक अम्ल बीमारियां उत्पन्न होने को रोकते हैं।

"गावः विषनाशिनी" अर्थात् गौ दूध में मौजूद यूरिक अम्ल शरीर में बनने वाले जहर को समाप्त कर देता है। गौ दूध में 60 प्रकार के पाचक रस मौजूद हैं। पाचक रसों के कारण ही थूक की लार बढ़ जाती है। पाचक रस कार्बनिक उत्प्रेरक हैं जो जीवित कोशिकाओं के द्वारा पैदा किये जाते हैं।

दूध में मौजूद मिठास शरीर के लिये आवश्यक उष्णता और शक्ति उत्पन्न करते हैं। लेक्टोज 4 किलो कैलोरी प्रति ग्राम उर्जा प्रदान करता है। लेक्टोज से ही गेलेक्टोज प्राप्त होता है। गेलेक्टोज नवजात शिशुओं में सेरेब्रोसाइडों को बनाने में सहायक होता है। लेक्टोज आंतों में विटामिनों के संश्लेषण और कैल्शियम, फास्फोरस, मेग्नेशियम के अवशोषण को बढ़ाता है। लेक्टोज वसा शरीर में जमने से रोकता हैं। लेक्टोज मानव मस्तिष्क का भोजन है। लेक्टोज किण्वन करने के लिये जरुरी हैं। कंज्यूगेटेड लीओलिक अम्ल सिर्फ गोमाता के दूध में पाया जाता है। सीएलए, वसा एवं भार को नियंत्रित करता है, तथा मांसपेशियों में वृद्धि होती है। दूधारु गोमाता के पेट में ब्यूटाइरिविब्रियो फाइब्रिसाल्वेन्स नाम के जीवाणु उपस्थित होते हैं जो कि लीयोलिक अम्ल को कंज्यूगेटेड लीयोलिक अम्ल में बदल देते हैं। कंज्यूगेटेड लियोलिक अम्ल मानव के रक्त में पहुंचने के बाद में ऐसे एन्जाइम उत्पन्न कर देता है जो टयूमर उत्पन्न करने या कोशिका भित्ति को नष्ट होने से बचाते हैं।

आरयिनिन, डिबोक्सिलेज या प्रोटिन काइनेज, सीआर साइटोक्रोम पी–450 जो कैंसर उत्पन्न करने वाले कारक माने जाते हैं। सीएलए इनको रोकता है। गोमाता के दूध में 4.5 मिलिग्राम सीएलए है।

गोमाता के दूध में 5 प्रतिशत नाइट्रोजन, 4 प्रकार के फास्फोरस यौगिक, 25 प्रकार के धातु तत्व, 8 प्रकार के विण्व, 76 सीसी कार्बनडाईऑक्साइड ओक्सीजन, नाईट्रोजन, 87.1 प्रतिशत जल मौजूद है। 25 प्रकार के खनिज, 25 प्रकार के विटामिन्स, एम.डी.जी.आई, स्ट्रोन्शियम सेरेब्रोसाइड्स मौजूद है।

गोमाता के दूध में मौजूद विटामिनों में विटामिन सी, कैरोटिन, विटामिन के, विटामिन कोलीन, विटामिन एच यानी बायोटीन, विटामिन ई, विटामिन बी–9, विटामिन बी–6, विटामिन बी–4, विटामिन बी–3, विटामिन बी–2 विटामिन बी–1, डी, विटामिन ए एवं ए–1 मौजूद हैं।

गौ–दुग्ध में मौजूद खनिजों में फलोरिन, सिलोकोन, आयोडीन, क्लोरीन, गंधक, क्रोमियम, मेगनीज, लोहा, तांबा, सोडियम, कोबोल्ट, जस्ता, साइट्रेटस है। गोमाता के सायं के दूध में मेलाटोनिन विशेष तत्व होता है। रात्रि में सोते समय पीने पर गहरी नींद आती है। प्राकृतिक–योग, आयुर्वेद व अध्यात्मिक चिकित्सा का आधार गौरस है, असंख्य रोगिक को दुग्धकल्प से सही किया जा चुका है।

गौघृत का दीपक व यज्ञ करने पर ऑक्सीजन की मात्रा बढ़कर देवता प्रसन्न होते हैं।

योगेश्वर श्री कृष्ण गौ–मक्खन, मिश्री के भोग से प्रसन्न होते हैं। दूध, दही, गोबर का रस, गोमूत्र, गौ मक्खन पंचगव्य कहलाता है।

पंचगव्य में 24 जड़ी बूटियों को मिलाने पर महापंच गव्य बनता है।

दूध में घी मिलाने पर अमृत बन जाता है।

घी यदि 10 साल पुराना हो जाये तो जीर्ण कहलाता है। जीर्ण यानी पतला (हलका), सूक्ष्म, तार तार।

घी यदि 100 से 1000 साल पुराना हो जाये तो कौम्भ कहलाता है।

घी यदि 1100 साल से पुराना हो जाये तो महाघृत कहलाता है। गोमाता का वरदान गोमय है। "गोमये बसते लक्ष्मी" यानी गोमय में 5 प्रकार की लक्ष्मी ऐश्वर्यों के साथ मौजूद है। गोबर मल नहीं मलशोधक है। गोबर सबसे श्रेष्ठ विषनाशक है। धरती मां का भोजन है। गोबर का रस पिलाने पर जहर तुरन्त ही उतर जाता है। गोबर में मौजूद फिनोल, फार्मेलीन, इंडोल, अमोनिया मेंथोल, विटामिन–बी–12, पोटाश, स्ट्रोशियम जैसे करोड़ों रसायन व औषधि तत्व मौजूद हैं। जो जैविक खेती के आधार स्तम्भ हैं। गोबर बिजली को पूरी तरह से सोख लेता है। गोबर के कण्डे हवन में उपयोग करने पर वातावरण में मौजूद सूक्ष्म जीवाणुओं की रक्षा व कीटाणुओं को साफ करता हैं। प्रसव के पूर्व गोबर का रस पिलाने से प्रसव सामान्य होता है।

चांदी के बर्तन में दूध जमाकर दही तैयार कर गर्भवती महिला को खिलाने पर चाँद जैसा सुन्दर बच्चा उत्पन्न होता है।

चाँदी के बर्तन में दूध जमाकर दही को बिलोकर पतली छाछ को पीने पर मधुमेह की बीमारी पूरी तरह दूर हो जाती है। श्यामा गाय में सूर्य की सातों किरणों पूरी तरह से सोख लेने के कारण ही विशेष उर्जा है।

✦ नन्दराज–एक करोड़ गोवंश जिसके पास हो उसे यह सम्मान दिया जाता था।

✦ वृषभानुवर–50 लाख गोवंश जिसके पास है।

✦ वृषभानु – 10 लाख गोवंश जिसके पास हो।

✦ नन्द – 7 लाख गोवंश जिसके पास हो।

✦ उपनन्द – 5 लाख गोवंश जिसके पास हो।

✦ गोप – 1 लाख गोवंश जिसके पास हो।

✦ गोकुल – 10 हजार गोवंश का समूह जहां पर हो।

✦ गौ–माता असंख्य विशेषताओं से युक्त अमृत का सागर है। अतः

पालें प्यारी–प्यारी गौ–बीमारी मिटायें सौ।
जो घर तुलसी और गाय, वो घर डॉक्टर कबहूं न जाय।।

गौमाता से प्राप्त पंचगव्य है दिव्यरसायन। पाप रोग करता प्रक्षालन।।

अंत में गौमाता की संक्षिप्त विशेषताएँ :–

✦ गौमाता अपने देश का अर्थशास्त्र है।
✦ गौमाता अपने देश का धर्मशास्त्र है।
✦ गौमाता अपने देश का कृषि शास्त्र है।
✦ गौमाता अपने देश का समाजशास्त्र है।
✦ गौमाता अपने देश का विज्ञानशास्त्र है।
✦ गौमाता अपने देश का आरोग्य शास्त्र है।
✦ गौमाता अपने देश का अध्यात्म शास्त्र है।
✦ गौमाता अपने देश का पर्यावरण शास्त्र है।
✦ गौमाता स्नेह की सरिता है।
✦ गौमाता करुणा का काव्य है।
✦ गौमाता वात्सल्य का मंदिर है।
✦ गौमाता ममता का महासागर है।
✦ गौमाता मातृत्व का महाकाव्य है।
✦ गौमाता ब्रह्माण्ड की पोषक है।
✦ गौमाता विश्व की माता है।

नोटः उपरोक्त विशेषताएँ केवल देशी नस्ल की गौमाता में ही हैं विदेशी नस्ल में नहीं। अतः विदेशी गायों का दूध लाभ की जगह नुकसान करता है।

thearyasamaj.org

भारत रत्न पं. मदन मोहन मालवीय

–लेखक विजय गुप्त (साहित्यकार)

न त्वम् कामये राज्यम्,
न स्वर्ग न पुनर्भवम्
कामये दुःख तप्तानाम्
प्राणिनाम् आर्तिनाशनम्।

अर्थः – न कामना मेरी राज्य, न स्वर्ग, न भवनों की प्राप्ति हो, कामना केवल यही कि पीड़ितों के दुख व कष्टों की समाप्ति हो।

आजीवन जिस राष्ट्र पुरुष और महान विभूति के हृदय में यह ज्योति निरन्तर जलती रही, जिसके श्वास-श्वास की सम्पूर्ण श्रृंखला में मानव और राष्ट्रहित की कामना बनी रही और जिसका सम्पूर्ण जीवन सर्व के हितार्थ और उत्थान में समर्पित रहा वो महामना पं. मदन मोहन मालवीय जी भारत रत्न से सम्मानित विलक्षण प्रतिभा के धनी और समर्पण के प्रतीक व जननायक थे।

पं. मदन मोहन मालवीय जी का जन्म 25 दिसम्बर 1861 ई. को संगम नगरी इलाहबाद में हुआ। उनकी माताश्री भूनादेवी तथा पिताश्री पं. वज्रनाथ थे। इनके पूर्वज मध्यप्रदेश के मालवा प्रान्त के थे, जो इलाहाबाद आकर बस गए। इसलिए ये मालवीय के नाम से जाने गए। यद्यपि पण्डित मदन मोहन जी का जन्म इलाहाबाद में हुआ परन्तु अपनी कर्म और तपस्थली इन्होंने काशी (बनारस) को ही बनाया। वहीं आपकी अथक साधना और परिश्रम से, पूर्ण लगन और समर्पण भाव से काशी हिन्दू विश्व विद्यालय की स्थापना का पुण्य कार्य 1916 ई. में पूरा किया जिसके संकल्प को 1904 ई. से पूरा करने के लिए अपनी चली चलाई वकालत को किनारे रख दिया।

उस अन्धेरे युग में आवश्यकता थी ज्ञान के प्रकाश की,

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय की रचना गाथा बनी विश्व के इतिहास की।

बहुत कम लोग इस बात से अवगत होंगे कि ब्रिटिश सरकार अपना विशिष्ट नागरिक सम्मान "सर" की उपाधि से उन्हें सम्मानित करना चाहती थी, जिसे भारत सपूत और राष्ट्रीयता के प्रखर नायक पं. मदन मोहन मालवीय जी ने अस्वीकार कर दिया। पूछने पर उन्होंने लोगों से इतना ही कहा मेरे पास पण्डित की उपाधि पहले ही विद्यमान है जो "सर" की उपाधि से कहीं ऊंची है। वह दौर ब्रिटिश सरकार के प्रति जनमानस से आंतकित व पीड़ित और आक्रोश का था। यह अस्वीकृति उनकी प्रखर राष्ट्र भक्ति की भावना को प्रमाणित करती है।

पण्डित मदन मोहन मालवीय जी स्वाधीनता संग्राम के अग्रणी पंक्ति के नायकों में अपना विशिष्ट स्थान रखते हैं। वे देश भक्त, राजनेता, सुधारक, शिक्षाविद्, शिक्षक, सम्पादक और उत्कृष्ट श्रेणी के वक्ता और ऊंचे स्तर के अधिवक्ता थे जो किसी भी कीमत पर झूठे मुकदमें की पैरवी करने के लिए तैयार नहीं हुए। वे सच्चे भारतीय और संस्कृति के नायक थे। अपनी वकालत को यद्यपि हिन्दू विश्वविद्यालय के निर्माण के कारण छोड़ चुके थे। परन्तु देश की पुकार पर वह दो दशकों के अन्तराल के बाद पुनः वकालत के क्षेत्र मं उतरे, जब गोरखपुर में 1920 के समय गांधी जी के आह्वान पर असहयोग आन्दोलन आरम्भ हुआ। चौरा चौरी का भीषण हिसंककाण्ड, आगजनी आदि की घटनाओं का कारण बना। बहुत बड़ी जन-धन की हानि हुई। ब्रिटिश सरकार ने मुकदमा चलाया और 170 लोगों को फांसी की सजा सुनाई गई। पण्डित जी भारतीयों के पक्षधर बनकर वकील के रूप में मुकदमा लड़ने के लिए प्रस्तुत हुए और अपनी कुशाग्र और तार्किक प्रतिभा के आधार पर 151 व्यक्तियों को फांसी के फन्दे से बचा लिया। बड़े-बड़े अंग्रेज, वकील और जज उनकी प्रतिभा के दिवाने हो गए। इस महत् कार्य के लिए सभी और उनका स्वागत और सम्मान हुआ।

काशी हिन्दु विश्वविद्यालय का निर्माण का कार्य अत्यन्त चुनौती पूर्ण और कठिन था। यद्यपि 1902 ई. में स्वामी श्रद्धानन्द ने गंगा के तट पर हरिद्वार में गुरुकुल कांगड़ी की स्थापना अपनी सारी ऊर्जा और शक्ति लगाकर स्थापना की थी, जिसमें प्राचीन गुरुकुल पद्धति को शिक्षण के लिए अपनाया गया था। लेकिन पण्डित जी ने आधुनिक शिक्षा को वक्त के अनुकूल समझकर इसमे चिकित्सा, इन्जीनियरिंग के साथ ज्ञान विज्ञान के कई संकाय स्थापित किए। आज इसमें लगभग 30 हजार विद्यार्थी शिक्षा प्राप्त करते हैं और यह विश्व की एक अनूठी शिक्षण स्थली और विश्व का सबसे बड़ा विश्वविद्यालय है। इसके निर्माण के लिए पं. मदन मोहन मालवीय जी ने जनता और राजाओं-नवाबों के आगे अपनी झोली फैलाई उन्होंने जनता से पाई, धैले, पैसे, आना, चव्वनी... रूपये आदि इक्कठे किये और शिक्षा के इस पुनीत कार्य को सम्पन्न किया।

काशी हिन्दु विश्वविद्यालय के निर्माण के लिए जब वो दान लेने के लिए भिन्न भिन्न लोगों के द्वार पर पंहुचे, तब किसी ने सत्कार किया और किसी ने दुत्कार दिया। किसी ने सम्मान के फूल भेंट किये, तो किसी नवाब ने उनसे कहा कि दान के नाम पर मेरे जूते ही ले लीजिए। पण्डित जी ने बड़ी विनम्रता से उनके जूतों को उठाया और उन जूतों को उनकी जनता के बीच नीलाम किया। उसकी रसीद बनाकर नवाब को भेज दी। शर्मिन्दा होकर नवाब साहब को अपनी गल्ती का एहसास हुआ और फिर उन्होंने खुले दिल से इस विद्या के मन्दिर के लिए अपना सहयोग दिया। हैदराबाद के निजाम साहब ने भी प्रारम्भ में प्रतिकूल व्यवहार किया था। लेकिन बाद में उन्होंने भी भूल को सुधारते हुए जन हित के इस कार्य में योगदान किया।

सौभाग्यवश पं. मदन मोहन मालवीय जी के विलक्षण कुशल नेतृत्व और उदार हृदय के कारण काशी विश्वविद्यालय के गौरव को बढ़ाने में श्री सुन्दरलाल, डा. राधाकृष्णन (भूतपूर्व राष्ट्रपति), डा. अमरनाथ झा, आचार्य नरेन्द्र देव, डा. रामा स्वामी अय्यर, डा. त्रिगुणसेन (भूतपूर्व केन्द्रीय शिक्षामंत्री) और स्वंय पंडित जी के कुलपति पद पर रहकर इसकी गरिमा और गौरव को बहुत शिखर तक पंहुचाया। आज काशी हिन्दू विश्वविद्यालय शिक्षा के क्षेत्र में बहुत अग्रणी और विशिष्ट है। अविभाजित भारत की सीमाएँ 1947 ई. से पूर्व बहुत बड़ी थीं। हिन्द केसरी गामा, जब बड़े बड़े विशालकाय पहलवानों को पराजित करके हिन्द केसरी बने तब उन्हें इस विश्वविद्यालय में आमन्त्रित किया गया। गामा ख्याति के शिखर पर थे। वे बनारस आए। रथ पर बैठकर हाथों में चान्दी की गदा उठाए हुए, जब वो बनारस की गलियों में से गुजरे, तब उनके पीछे चहूँ ओर जयघोष गुजाएंमान था। गुलाब और गेंदे की बौछार जो गामा पर की गई थीं उनसे बनारस की सड़कें भरी हुई थी। गामा विश्वविद्यालय के प्रांगण में पंहुचे। विशाल जनसमूह बारबार हिन्द केसरी गामा के नारे लगा रहा था। आखिर वो समय आ ही गया जिसकी प्रतिक्षा थी। युवा, विद्यार्थी, शिक्षक, बड़े अधिकारी सब बड़े कौतूहल से गामा के उद्बोधन को सुनना चाहते थे। गामा से निवेदन किया गया कि वह अपना उद्बोधन नवयुवकों की प्रेरणा हेतु दें। गामा ने युवकों के विशाल जनसमूह की ओर इंगित करते हुए कहा... "मेरे प्यारे नौजवान साथियों व दोस्तों! मेरी आप सबसे एक अर्ज़ है आप सबको एक सलाह है... आप कभी भी गामा बनने का न तो कोई ख्वाब देखें और ना हीं कोई इरादा पालें। क्योंकि मेरे मन में, मेरे ख्यालों में, हमेशा बड़ी से बड़ी हस्ती को उठाकर उसे जमीन पर पटककर, उसकी आन-बान-शान को धूल में, मिटटी में मिलाने की रही है, और रहती है। इसलिए मेरी आपसे यही गुजारिश है, यही ख्वाहिश है कि अगर बनना है तो आप उनकी (पं. मदन मोहन मालवीय जी की ओर संकेत करते हुए) तरह बनें। क्योंकि वो धूल में पड़े हुए, जमीन पर गिरे हुए इन्सानों को ऊंचा उठाने की कोशिश में लगे हुए हैं, नेक काम कर रहे हैं। पूरी दुनिया की इन्सानियत को इन पर नाज है।" गामा ने वहाँ पं. पदन मोहन मालवीय जी के नाम का जय घोष लगाया तो समूचा प्रांगण पण्डित जी के जयघोष के लगाए गए नारों से गूंज उठा।

पं. मदन मोहन मालवीय जी कांग्रेस के दो बार अध्यक्ष रहे। सन् 1886 में कांग्रेस के कलकता अधिवेशन में मात्र 25 वर्ष की आयु में वे अपने गुरु आदित्य राम भट्टाचार्य के साथ उन्होंने भाग लिया। पण्डित जी ने जो मंच से वयक्तव्य दिया, उसे सुनकर सर ए.ओ. हयूम बहुत प्रभावित हुए और उन्होंने उन्हें देश का भावी नेता कहा। पण्डित जी समर्पित समाज सुधारक और कुशल नेता थे। उन्होंन दलितों को विश्वनाथ के मन्दिर में प्रवेश के लिए नेतृत्व प्रदान किया। स्वामी श्रद्धानन्द जी के साथ मिलकर 1923 में भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा की स्थापना की और हिन्दु समाज को विघटन से बचाया और उन लोगों के लिए अपने धर्म में पुनः लौटने का मार्ग प्रशस्त किया जो अपने पूर्व धर्म में लौटने के लिए उत्सुक थे। यद्यपि मालवीय जी से महात्मा गांधी बहुत प्रभावित थे। परन्तु फिर भी तत्कालीन समय में बहुत सी ऐसी स्थितियाँ पनपती रहीं जिससे उनका कांग्रेस से मोह भंग हो गया और उन्होंने हिन्दु महासभा की स्थापना में अपना योगदान दिया।

पं. मदन मोहन मालवीय जी ने पत्रकारिता के क्षेत्र में अद्भुत योगदान दिया। वह बहुत ऊंचे सिद्धान्तों के पक्षधर और पत्रकारिता की स्वतन्त्रता और मूल्यों के समर्थक थे। उन्होंने हिन्दोंस्थान नामक साप्ताहिक पत्रिका को दैनिक लोकप्रिय समाचार पत्र बना दिया। पण्डित जी ने इस पत्र के मालिक राजा रामपाल सिंह को पहले ही अवगत कर रखा था कि वे शराब पीकर नशे में कभी उनके सामने कार्यालय में न आएँ। लेकिन एक दिन राजा रामपाल शराब पीकर पण्डित जी के समक्ष कार्यालय में आ गए तो पण्डित जी ने उसी समय अपना त्यागपत्र देकर सम्पादक के पद को छोड़ दिया। बाद में उन्होंने इण्डियन ओपिनियन, लीडर मर्यादा, सनातन धर्म और अभ्युदय का सम्पादन किया और इन समस्त पत्र पत्रिकाओं को ऊंचे शिखर प्रदान किए। वे श्रीमद्भागवत तथा गीता के विख्यात् व्याख्याकार थे।

पं. मदन मोहन मालवीय जी को किसी भी राजनैतिक दल के साथ नत्थी नहीं किया जा सकता। वह विराट व्यक्तित्व के स्वामी थे। वे उदारमना, समूची मानवता के प्रति समर्पित विलक्षण गुणों से सम्पन्न थे। सन् 1946 में पण्डित जी का निधन हो गया। वे स्वतन्त्र भारत के गगन की प्रातः के दर्शन न कर सके। यह कितना अच्छा संयोग है कि भारत सरकार ने पूर्व प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी तथा पं. मदन मोहन मालवीय जी को अपनी अपनी विशेषताओं और राष्ट्र के उत्थान के लिए उनके योगदान के अनुरूप भारत रत्न का सम्मान प्रदान किया। साधुवाद!

चांद और सूरज ही रूप संवारे
इस विशाल गगन का,
मन की पीड़ा पहचान आंसू पोंछ,
पीड़ित के नयन का।
त्याग भाव समर्पण से रूप संवारा
जिन्होंने अपने वतन का,
बधाई, वाजपेई जी, मालवीय जी को
सम्मान मिला भारत रत्न का।

– एफ-1/335, मदनगीर, नई दिल्ली

thearyasamaj.org

"भूली विसरी विभूति "
"स्वर्गीय महाशय गोविंदरामजी आर्य"

- भीम सेन कामराह

गतांक से आगे...

मई-जून 1947 में भारत विभाजन की चर्चा जोरो पर थी। मुस्लिम बहुल प्रदेश बहावलपुर स्टेट पाकिस्तान का अंग बनना भी तय था। विभाजन का आधार भी हिंदू-मुस्लिम को बांट कर, दो देश स्थापित करना था। अतः महाशय जी अपने चार पाँच मित्रों के साथ भारत में उचित स्थान ढूंढकर विभाजन से पूर्व स्थानान्तरित होने का निर्णय लेकर, भारत की राजधानी दिल्ली पहुँचे। देहली के मंदिर आर्य समाज दीवान हाल के तत्कालीन मन्त्री श्री बाल मुकंद जी आहुजा से सम्पर्क स्थापित किया।

मन्त्री जी ने समस्या का समाधान हेतु आश्वासन दिया कि एक अगस्त को मेरा वाहन दिल्ली रेलवे स्टेशन पर आपको लाने के लिए उपस्थित रहेगा और बाद में देहली में रहने की व्यवस्था करा देंगें।

चाँदनी चौक में अकस्मात् महाशय कोटू राम जी प्रधान आर्य समाज उच्चशरीफ का सड़क दुर्घटना में बाजू टूट गया और वे अस्पताल में भर्ती करा दिए गए। उस समय शेष सज्जन जो साथ में आए थे वापस उच्चशरीफ जाने का प्रोग्राम बनाने लगे तो महाशय जी ने कहा कि मैं महाशय कोटूराम जी को अकेला छोड़कर नहीं जा सकता। अस्पताल में इनकी सेवा सुश्रुषा में रहने के कारण इन्हें वापस पाकिस्तान जाने में विलम्ब हो गया। शेष व्यक्ति जिनमें महाशय सोम देव आर्य भी थे वापस जाकर जुलाई 1947 में वापस भारत लौट आए।

1 अगस्त 1947 को महाशय जी, महाशय कोटू राम के साथ वापस उच्चशरीफ पहुचे। वहाँ मुस्लिम भाई भी महाशय जी की जुदाई में बेहाल हो रहे थे। अगले दिन आर्य समाज मंदिर में भारी सभा हुई। सभा हिन्दु मुस्लिम भाई के नारे लगने लगे। मुस्लिम भाईयों का कहना था कि हम हिंदुओं को जुदा नहीं कर सकते। किसी भी स्थिति में उच्चशरीफ छोड़कर जाने नहीं देगें। जो बाद में हुआ ऐसी संभावना भी नहीं थी। जो आशाओं के विपरीत हत्याएँ और लुटपाट का सिलसिला प्रारंभ हुआ।

प्रारंभ अगस्त में ही स्थिति भयावह होती चली गई। सारे भारत में हिन्दु मुस्लिम फसाद प्रारंभ हो गए। किसी का वहाँ से निकलना खतरे से खाली नही था। ऐसे समय में महाशय जी के लिए सभी भाई बंधुओं को छोड़कर जाना भी असंभव था। 15 अगस्त 1947 को भारत विभाजन हो गया। राजनैतिक कारणों से कुचक्रों के कारण मानवता चीतकार कर उठी।

बहावलपुर का नबाव भी अपने उपचार के बहाने लंदन चला गया। पूरा प्रांत कठमुल्लाओं के आश्रित हो गया। जो अत्याचार मानवता का संहार नारी के सतीत्व का विनाश, उच्चशरीफ के आस् पास के सभी ग्रामीण क्षेत्रों में होने वाला नर संहार निकट क्षेत्र में स्थित चन्नी गोठ में एक इहाते में रहने वाले 30-40 परिवारों को झांसे से आश्वास्त कर बाहर निकाल कर महिलाओं और पुरूषों को अलग-अलग करके पुरूषों की हत्या कर, महिलाओं को उठा ले जाने का कुकृत्य यह भारत विभाजन का दुष्परिणाम था। जब कि चन्नी गोठ वाले स्वयं अग्नि की भेंट चढ़ जाने का प्रबंध कर चुके थे क्यों कि पहिलाओं से होने वाले अत्याचार की संभावनाएँ अधिक थी जिससे वे बच न पाए।

मार काट करने वाले हजूम बन्दूकों या तलवारों का प्रयोग नही करते थे। कुल्हाड़ियों से लकड़ी के समान प्रहार करके मारा जाता था। चन्नी गोठ के एक सज्जन, जो भारत में अबोहर मन्डी में मिले थे। घायल अवस्था में लाशों के ढेर में से उठकर बचते बचाते भारत पहुँचे थे जिनकी स्थिति देखकर हृदय विदीर्ण होता था उनके माथे पर, गले में गाल पर कान के नीचे कुल्हाड़ी से किए जाने वाले प्रहारों के निशान थे इस प्रकार के अत्याचारों का सामना वहाँ पर हम सबको करना पड़ा।

"दे दी हमें आजादी बिना खड़ग बिना ढाल" कांग्रेस में अपने मुँह मियां मिटू बनने वाले गीत हो सकते है परन्तु विभाजन का निर्णय अति दुर्भाग्यपूर्ण था इसे महानता का कार्य कहकर सराहा नही जा सकता जिससे निर्दोषों को बली चढ़ा दिया गया हो।

साम्प्रदायिकता के आधार पर विभाजन के फलस्वरूप सांप्रदायिक उन्माद ने भयंकर रूप ले लिया। स्थानीय हिन्दू और मुसलमानों के सौहार्द में विकृति आ गई। एक शहर के मुसलमान दूसरे शहर में जाकर तथा बाहर से आकर अपरिचित मुसलमानों के आंतक से प्रतिक्षण भयावह वातावरण से स्थिति असहनीय होती जा रही थी।

क्योंकि उच्चशरीफ मुस्लिम सम्प्रदाय की पवित्र स्थली थी यहाँ दो पीर जिनके नाम शमस्सुद्दीन उच्च गिलानी तथा नौबहार उच्च बुखारी था। इनकी मान्यता मुस्लिम भाईयों की दृष्टि में, परेमश्वर की थी, दूर दूर से इनके स्थान पर आकर यह लोग अपनी समस्याओं का समाधान पा लेने में विश्वास रखते थे। चाहे संतान प्राप्ति हो, कार्य व्यापार अथवा गृह का कलह क्लेश या अन्य किसी प्रकार की समस्या का समाधान इनकी शरण में आकर वे प्राप्त करने में संतुष्टि अनुभव करते थे।

पीर महोदय यह सभी कार्य शुद्धात्मा से उपकार किया करते थे। ऐसे समय में साम्प्रदायिक उन्माद के कारण जो नर संहार के वीभत्स आतंक का बोलबाला था। अपने अन्तहृदय की आवाज़ से दो तीन दिन बाद मगदूम नौ बहार उच्च बुखारी ने शहर में मुनादि करा दी कि कल रात्रि स्वप्न में मेरे दादा ने आकर कहा है कि तुमने हिन्दुओं की रक्षा करनी है। जिन्हें मुझ पर विश्वास हो, मेरे निवास पर आ जाओ, मैं यथासंभव सुरक्षा-प्रदान करूँगा। पूरा शहर अपने घरों को छोड़कर सभी नगरवासी उसकी शरण में चले गए। नौ बहार का निवास काफी बड़े क्षेत्र में था चार दिवारी के साथ बहुत बड़े फाटक के रूप में प्रवेश द्वार था अगले दिन आततताईयों, पठानों का हुजूम वहॉएकत्र होकर नारे लगते हुए लपक रहे थे। तो नौ बहार स्वयं नंगी तलवार लेकर द्वार पर हिन्दुओं की सुरक्षा के लिए समक्ष होकर उन आततताईयों, से कहा कि पहले मेरा कत्ल होगा फिर उन पर हमला होगा।

दूसरी ओर मानवीय भावना के अनुरूप शमसुद्दीन उच्च गिलानी के मन में इस प्रकार के कृत्य से कि नौबहार उच्च बुखारी ही हिन्दुओं की सुरक्षा का श्रेय क्यों ले जाएँ अतः कुछ सम्भ्रांत परिवार के सदस्यों तथा महाशय गोविंदराम जी के परिवार के कुछ सदस्य तथा डॉक्टर शानू लाल जी का परिवार आदि 30-35 सदस्यों को शाही महल में स्थान दिया।

इस शाही महल में अगले दिन दोपहर के समय कुछ ऐसा खटका हुआ, मौत तो सर पर मंडरा रही थी। उस खटके के भय से सभी शरणार्थियों ने भवन के सभी दरवाजे बंद कर, बीच के कमरे में इकट्ठे हो गए। कुछ देर के बाद दरवाज़े को खटखटाने की आवाज़ आई किसी ने दरवाजा खोलने का सहास नही किया, पुनः आवाज़ आई मैं शमसुद्दीन बोल रहा हूँ। दरवाज़ा खोल दिया गया, तभी शमसुद्दीन ने कहा की शहर में गुंडे घूम रहे हैं। उन्हों ने अपने हाथ के अंगूठे में छुर्रे से लगा कट दिखाया की एक गुंडे से छुर्रा छीनने पर यह घाव हुआ है।

पुनः कहा की हालात काबू के बाहर होने के कारण स्थिति को शांत करने के लिए नौबहार उच्च बुखारी की ओर से सूचना आई है कि वहाँ हिन्दु मुसलमान होने पर सहमत हो गए हैं। यह सुनकर महाशय गोविंदराम जी आवेश में आ गए, यह कैसे हो सकता है? यह कह कर उच्चबुखारी क्षेत्र की ओर जाने को तैयार हो गए। तभी शमसुद्दीन ने महाशय जी की सुरक्षा के लिए दो तीन पहलवान भेज दिए। भ्राता श्री बल्देव राज कामराह जी भी साथ हो लिये मैं (भीमसेन कामराह) भी साथ था। वहाँ पहुँच कर महाशय जी ने ऊँचे स्थान पर खड़े होकर कहा कि यह संभव नहीं है। इस कार्य की स्वीकृति के लिए हाथ खड़े करने के लिए कहा तो सभी के हाथ ऊपर उठ गए। अगले दिन सभी अपने अपने घरों को चले गए।

इस प्रकार एक होने वाला अत्याचार तथा नरसंहार तो बच गया परन्तु यह जो कार्य हुआ, किसी को स्वीकार्य नहीं था। मौत के भय से मूक स्वीकारोक्ति थी। छुप छुपाकर ईश्वरोपासना यज्ञ आदि कार्य होते रहे। कुछ सामाजिक व्यवस्था के लिए निर्णय भी लिए जैस, जिस भी किसी परिवार में युवा पुत्र पुत्री हों, तो उनके रिश्ते कर दिए गए, जिससे आततताईयों की कुदृष्टि से बचा जा सके! कुछ ही समय में नवाब साहब की वापसी पर, पश्चाताप् एवं शुद्धिकरण हेतु 40 दिन का महायज्ञ आर्य समाज मंदिर में संपन्न हुआ।

-शेष अगले अंक में....

2696, शादीपुर मैन बाजार,
वेस्ट पटेल नगर, नई दिल्ली

thearyasamaj.org

भारत माता के अमर पुत्र : महात्मा हंसराज

जिस प्रकार मणियों का मूल्य पृथक रहने पर कम होता है माला के रूप में उनका मूल्य बढ़ जाता है, इसी प्रकार जाति जब एक होती है तो उसका विशेष आदर व सम्मान तथा मूल्य नहीं पा सकते, मनुष्य के भीतर एक प्रकार की आवाज है, जिसे धर्म अथवा ईश्वर की आवाज कहना चाहिए इस धर्म की आवाज को सुनना, और सुनकर उसके अनुसार आचरण करना और उस साँचे में अपने– आपको ढलने का आदेश दे यह शिक्षा का तृतीय आदर्श है, छोटी–छोटी बातों में मानव का चरित्र भली प्रकार से जाना व जाँचा जाता है अन्तरात्मा बनाने के बाद आप में निर्मलता आ आएगी, जो सबसे प्रथम बात है वचन का सच्चा बनना चाहिए, माता–पिता की शिक्षा के बिना जैसे पुत्र अज्ञानी रहता है, इसी प्रकार ईश्वरीय ज्ञान के बिना, वेदों के बिना हम मनुष्य लोग भी अज्ञानी ही रहते हैं, सन्ध्या स्वयं एक शस्त्र है और बड़ा शस्त्र है जैसे सूर्य की रश्मियों से रात्रि की सेनाएँ स्वयं ही छिन्न–भिन्न हो जाती हैं, उसी प्रकार पाप के दल इस शस्त्र के सामने नष्ट–भ्रष्ट हो जाता है, इन सन्ध्या के मन्त्रों की अद्भूत शक्ति से इसके अर्थों पर विचार करने से जीवन के आदर्श उच्च हो जाते हैं।

आर्यों का कर्त्तव्य है कि वे अपने सामने आर्य सिद्धान्त रखें और इन सिद्धान्तों को आगे बढाते हुए आर्यसमाज को दृढ करें जो मनुष्य पुरुषार्थी होकर सबके उपकार करने वाले और धार्मिक होते हैं, वही पूर्ण ऐश्वर्य की रक्षा करके सर्वत्र सत्कार के योग्य होते है, वैदों के स्वाध्याय का यह अर्थ नहीं कि वह वैदिक शब्दों की छानबीन करता रहे, अपितु वह मन्त्रों का स्वाध्याय करके उनके साधारण अर्थों को भी समझे और उन्हें बारम्बार दुहारकर अपनी आत्मा में वैदिक भाव को प्रविष्ट करें, प्रत्येक आर्य का कर्त्तव्य है कि वह अपने नगर, कस्बा, ग्राम तथा कुल में एक बढिया उदाहरण बने और वेदों के प्रकाश को सामने रखें जो अन्यथा नहीं आर्यसमाज की सदस्यता हमें मुक्ति नहीं दिलाएगी मुक्ति तो हमारे शुभ कर्मों तथा पवित्र आचरण पर निर्भर हैं कर्म भी एक यज्ञ है प्राणायाम करो, चित्त निर्मल होगा, इसको स्थिर रखने के लिए बार–बार प्रयत्न करो, यही अभ्यास हैं चित्त की शुद्धता तथा परमात्मा के योग की तुलना में विषयों के सुख को तुच्छ समझो, यही वैराग्य है इन दोनों साधनों से अपने भीतर बल ग्रहण करो तथा प्रभो की अनन्य भक्ति के अधिक योग्य बनो इस प्रकार चित्त को रिक्त करके निर्मल परमात्मा का ध्यान करो, यही पूजन की विधि है।

शीश जगदीश के सन्मुख झुकाना जिसे,
मामा के समान गौ माता वह आर्य हैं।
भ्राता बहनों का अपमान असाह्य है जिसे,
प्राण देकर आन को बचाता वह आर्य हैं।।

– रोनक कुमार शास्त्री

शुद्धि समाचार सम्बन्धी घोषणा

फार्म–4 (नियम 8 देखिये)

1.	प्रकाशन का स्थान	: दिल्ली
2.	प्रकाशन की अवधि	: मासिक
3.	मुद्रक का नाम	: रामनाथ सहगल
4.	क्या भारत का नागरिक है?	: हाँ
5.	मुद्रक का पता	: भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा भवन, बिरला लाइन, दिल्ली–110007
6.	प्रकाशक का नाम	: रामनाथ सहगल
7.	क्या भारत का नागरिक है?	: हाँ
8.	प्रकाशक का पता	: भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा भवन, बिरला लाइन, दिल्ली–110007
9.	सम्पादक का नाम	: डॉ. कैलाश चन्द्र शास्त्री
	क्या भारत का नागरिक है ?	: हाँ
	सम्पादक का पता	: भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा भवन, बिरला लाइन, दिल्ली–110007

उन व्यक्तियों के नाम पते जो समाचार पत्र के स्वामी हों तथा जो समस्त पूंजी के एक प्रतिशत से अधिक के साझेदार या हिस्सेदार हों ।

मैं रामनाथ सहगल एतद् द्वारा घोषित करता हूँ कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिये विवरण सत्य हैं।

रामनाथ सहगल
प्रकाशक

दिनांक 01.04.2015

शुद्धि आन्दोलन द्वारा धर्म की रक्षा करके उत्तम पुरूष बनने के मार्ग

मनुष्य का जीवन परिवर्तनशील है। बौद्धिक, बल ही उसके आध्यात्मिक शक्ति को सबसे बड़ी प्रेरणा देकर शुभ कर्मों का संचार करता है। शुभ कर्म ही मनुष्य को उत्तम पुरुष के फल प्रधान करके महान आत्मा को छोटी छोटी स्तर से ऊपर उठाकर चरित्र का निर्माण कराता है। उसके सामने न जात पात, न धर्म न वर्ण न मैं हिन्दु हूँ, अथवा मुसलमान, ईसाई, सिख, पारसी, बुद्ध जैन हूँ कभी न उठता यहां तक कि जड़ चेतन की धारणा की सीमा भी टूट जाती है।

आज जो धर्म के खोटे सिक्के को चलाकर यह धर्म के परिर्वतन करने वाले प्रवर्तक ईसाई, ईस्लाम आदि संस्कार पर हिंसक, अत्याचारी, धन के लोभ से विदेशों में अच्छी पदवी पर नियुक्त करके उन्हें, आतंकवादी, लूटेरे, देश को विभाजित करने की नीतियों पर तुले हैं वह इंसान नहीं, क्योंकि इंसान या उत्तम पुरुष वह कहे जाते हैं जो दूसरे के दुःख में अपने सुःख को भूला देते हैं। इक संसार में जिन्होंने दूसरों के धर्म पर आंच लगा कर स्वयं शासन करते हैं वह कभी स्थाई सत्ता पर कभी रह नहीं सकते। यह ही हाल उपनिवेषवादियों, ईसाइयों, मुसलमानों का इतिहास के ग्रन्थों से उपलब्ध होता है।

अंग्रेजों ने भारत छोड़ा, संसार के अन्य देशों को छोड़ा क्योंकि उनमें उत्तम स्थान पाने के कारणों में त्रुटियों के मार्ग, लोभ हिंसा से शासन चलाने के अतिरिक्त देश में फूट गरीबी, भूख मरी, बेरोजगारी तथा बांटों और शासन चलाओ की बुराइयाँ भरी थी। दूसरों के धर्म को तोड़कर अपने धर्म में परिर्वतन करना, इंसान की आत्मा को लाचार बेवस बना कर कमजोर करके गुलाम बनाना फिर उस को गधे की तरह हांकना शरीर को क्षीण बना कर उसे मृत्यु के घाट उतारना।

आज अभी ही हम स्वतन्तत्रा की 68 वर्ष गाठें बड़े उत्साह से मना चुके हैं। पर वर्तमान शासकों को सबसे बड़ी बात ध्यान योग्य है, देश की सुरक्षा, सबसे प्राचीन वैदिक धर्म के वेदों के तत्व ज्ञान के संस्कारों को भरकर ऐसा राष्ट्र स्थापित करना चाहिए, जो न धर्म की चाल हो न सम्प्रदायें, न जात पात, मैं शुद्र हूँ, हिन्दू हूँ, मुसलमान, ईसाई, सिख पारसी हूँ न मेरा वर्ण व्यवस्था में हो न इस भिन्नता को उत्साह दूँ कि मैं छोटे तत्व सुनार, लोहार आदि से घृणा करता हूँ न मैं धनाड्य हूँ या गैर, अन्य व्यवसायों में प्रधान गिनती पर। केवल मेरे राष्ट्र संस्कार देश भक्ति, मानव सेवा तथा उपज को बढ़ाने तथा सब के पेट की आग भूख मिटाने का साधक उत्तम पुरुष बनूँ। यह ही श्रद्धा महर्षि दयानन्द ने 1875 में आर्य समाज की स्थापना करके बहुत से पहलूओं की रक्षा के साधन दिखाये। प्रधानतः चरित्र निर्माण, वेदों की सत्य विद्या ईश्वरीय ग्रन्थ की प्रेरणा स्वीकार करो। सत्य और असत्य का अन्तर दूर करो सत्य में श्रद्धा असत्य में घृणा शब्द को दूर करो। उत्तम पुरुष बनने के लिए – (1) शुद्धता का निर्माण करके धर्म परिर्वतन करने वालों से तीर का मुकाबला करो। (2) भारत की प्राचीन संस्कृति को अधार मानो और धर्म की सही परिभाषा कि न आपस में झगड़ा हो, न तकरार, न जीव, गऊ हत्या हो न बुचडखाने रहें, न देश विद्रोही रहें, न भ्रष्ट पात्र जो धोखे से भारत की पूंजी को स्विस आदि बैंकों में जमा कर चुके हैं उन पर कठोर कानून की धारा से वापस लाने का आदेश हो शिक्षा, स्वास्थ्य, देश के हर प्राणी की आतंकवाद धर्म विरोधी तत्वों से रक्षा हो। नारी का शोषण तथा विवाहित नारियों के दहेज के झगडों पर दण्ड हों प्राईमरी शिक्षा फ्री हो, कोई शिक्षा से वंचित न हो।

शुद्धि आन्दोलनों के प्रवक्ता यद्यपि अपने प्रतिज्ञा ली है कि धर्म परिवर्तन किये हुए हिन्दुओं को वापस लाने में पूरा जोर लगायेंगे, इस कार्य में लेखक श्री कोहली, बहन वसन्ती की प्रशंसा कर रहा हूँ और यह तुच्छ लेखक गिरजों ईसाइयों को अपने महर्षि जी के शुद्धि आन्दोलन की परम परा पर ध्यान रखकर उन्हें हिन्दु सनातन धर्म में किचड़ उठाने के लिए रोक के लिए निवेदन करता हूँ।

–सुरेन्द्र कुमार ढांडा एम.ए
विवेक विहार, दिल्ली–92

देख तेरे गमों में बादल सरीख होने आए है,
तेरे दुख में देख आज ये रोने आए हैं,
कुछ तो तूने भी अच्छे कर्म किए होंगे
किसी की बेरंग दुनिया में तूने भी रंग भरे होंगे,
यूं ही नहीं ये धरती भिगोने आए है,
देख तेरे गम में आज ये रोने आए हैं।

तेरा दिल घबराया और ये दौड़े चले आए,
तूने एक आह क्या भरी की तूफान लें आए,
न रुक न थम न घबराना कभी,
शेरों की शेर है तू,
यह अहसास दिलाने आए हैं,
देख तेरे गम में आज ये सरीख होने आए हैं।

न झुकना, न रोना, न पड़ना कभी कमज़ोर,
समंदर सूख जाऐंगे न होना कभी उदास तू,
दुनिया जीतने का दम है तुझमें,
सूरज सा तेज है तुझमें,
ये तुझे बताने आए हैं,
देख तेरे साथी तुझसे ये मिलने आए हैं।

–सीमा वर्मा
हिन्दी विशेष 2 वर्ष
कालिन्दी कालेज, दिल्ली

thearyasamaj.org

ओ३म् ईशावास्यमिद सर्वं यत्किञ्च जगत्यांजगत्।
तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा मा गृधः कस्य स्विद्धनम् ।।

– नारायण दास प्रयासी

बहिनों व भाईयों ! आज का विषय ईश्वर की पूजा का वैदिक प्रकार, परमात्मा की उपासना का वैदिक प्रकार क्या है यह आपकी सेवा में वर्णन करुंगा। दुनिया में दो प्रकार की चीज़ें हैं, एक जड़ और दूसरी चेतन। जो जड़ हैं वे ज्ञान शून्य हैं उनमें ज्ञान नहीं है। दूसरी चेतन हैं जिनमें ज्ञान है। इन दोनों प्रकार की चीज़ों को नाप लीजिए। चेतन में सब से छोटा जीवात्मा है और सब से बड़ा परमात्मा है। जड़ वस्तुओं में सबसे बड़ा परमात्मा है। जड़ वस्तुओं में सबसे छोटा परमाणु है और सबसे बड़ा आकाश है। यह वैज्ञनिक तरीका है जिससे मैंने इन तीनों चीज़ें को (ईश्वर, जीव और प्रकृति) अनादि साबित किया है। नित्य साबित किया है।

हमारे दुर्भाग्य से या सौभाग्य से भारत में कई मतावलम्बी हैं। इनमें मुख्य रूप से ईसाई, मुसलमान, आर्य समाजी न सनातन धर्मी हैं। बाकी और जो हैं उनकी इतनी मुख्यता नहीं है। ईसाइयों व मुसलमानों में कोई विशेष भेद नहीं है, थोड़ा ही भेद है, इसलिए उन्हें मैं मुसलमानों से जुदा नहीं करता हूँ। मैं चाहता हूँ कि सनातन धर्म और आर्य समाज में जो थोड़ा सा भेद है वह न रहे। उनको खास तौर से इस मजमून में शामिल कर लिया है।

मुसलमानों से इस सम्बन्ध में पूछताछ करने पर पता चलता है कि वे खुदा की इबत्दत करते हैं। इबादत 'अ, ब, द' शब्द से बना है जिसके माने गुलाम के हैं, बन्दे के हैं, सेवक के हैं।

सनातन धर्मी भाई इस सम्बन्ध में पूजा और भक्ति दो लफजों का अधिक प्रयोग करते हैं। दोनों शब्द संस्कृत के है। पूजा शब्द पूज धातु से बना है और पूजा का अर्थ सेवा है, पूज सेवायां। भक्ति शब्द में भज् धातु है, भज सेवायां । भज का अर्थ भी सेवा है। दोनों शब्दों के माने सेवा के हैं, खिदमत के हैं।

सनातन धर्मी भाई कहते हैं कि हम परमात्मा की खिदमत करते हैं, पूजा करते हैं। भगवान की सेवा के लिए क्या चाहिये, जरा यह विचारने की बात है। बहुत सीधे सीधे तरीके पर सेवक (सेवा करने वाला) सेव्य (जिसकी सेवा की जाये) सेवा (जो क्रिया सेवा के लिये करता है) और सेवा का सामान ये चार चीज़े होनी जरुरी हैं। यहा जीवात्मा खादिम या सेवक है, परमात्मा मखदूम या सेव्य है, सेवा की क्रिया और सेवा की सामग्री जो भी उन्होंने (सनातनी भाइयों ने) समझ रखी है, इन सब चीज़ों से वे ईश्वर की पूजा करते हैं। भगवान की पूजा करने से पूर्व अब यह मालूम करना पड़ेगा कि उसकी सेवा कैसे की जाए? भगवान के लिए हम कौन सी ऐसी चीज़ लायें, जिसकी उसे आवश्यकता है। उसकी आवश्यकता को जाने बिना, उसकी सेवा नहीं की जा सकती। आज तक कोई आदमी पता नहीं चला सका कि यह चीज़ ईश्वर की जरुरत में दाखिल है। पानी वह हमें देता है, भोजन वह हमें देता है, जीवन को बनाये रखने की सारी सामग्री वह हमें देता है, जिसका भण्डार अपूर्व है वह हमसे क्या चाहेगा?

जरुरत किसे कहते हैं जरा यह समझ लीजिए। जिसके बगैर जरुरतमन्द को जरुर पहुंच जाए। जिसे किसी वस्तु की आवश्यकता ही नहीं उसकी सेवा कैसे की जाए। हमें तो कुछ देकर सेवा करने की आदत पड़ी हुई है।

एक पुस्तक थी जिसका नाम था "दी एज आफ रीजन" टामस पेन ने (लेखक) इस सम्बन्ध में बड़ा अच्छा लिखा है: हम खुदा की खिदमत उस तरह नहीं कर सकते जिस तरह हम उनकी करते हैं जो खिदमत के बगैर अपना गुजारा नहीं कर सकते। जिस तरह हमारी खिदमत होती है इस तरह खुदा की खिदमत नहीं की जा सकती क्योंकि उसकी कोई जरुरत नहीं है। कितना अच्छा लिखा है टामस पैन ने।

सच्ची उपासना क्या है यह अब मैं आपकी सेवा में वर्णन करुगां। जरा ध्यान से सुनिए :

चेतनों में परमेश्वर और जड़ पदार्थों में प्रकृति दोनों बिल्कुल पूरे हैं इन्हें किसी चीज़ की आवश्यकता नहीं है।

भगवान की पूजा, सेवा या खिदमत का तरीका यह है कि जो ईश्वर के गुण हैं, जिनके धारण करने से आदमी का उत्थान हो सकता है, उन्नति हो सकती है अथवा परमात्मा से मिलकर श्रेष्ठ हो सकती है उन गुणों को अपने अन्दर धारण करें और अपने को ईश्वर सा अर्थात् ईश्वर के गुणों से युक्त बनाने का प्रयास करें।

जीवात्मा ईश्वर के गुणों को ग्रहण करने की क्षमता रखता है। दयालु बन सकता है, न्यायकारी भी बन सकता है। प्रातः और सायं सन्ध्या करके, बनने की चेष्टा करे। और अमल भी वैसा ही करे।

सेवा कैसे की जाय? कोई चीज़ उसे देकर उसकी पूजा हो सकती है? ईश्वर और प्रकृति दोनों पूरे हैं। इन्हें किसी भी चीज की आवश्यकता नहीं है। तो इन दोनों की सेवा इन्हें कोई चीज देकर नहीं होगी बल्कि अपने लाभ की वस्तुएं इन से प्राप्त करके इन की सेवा होगी। अपूर्ण की सेवा उससे कुछ लेकर व उसे कुछ देकर होती है और पूर्ण की सेवा उससे कुछ (अपने लाभ के लिए व उन्नति के लिए जितना जरुरी है) लेकर हुआ करती है।

मैंने यह प्रयास अपने स्वाध्याय को सफल करने के लिये किया है क्योकि किसी चीज़ की सफलता दूसरों को लाभ पहुंचाने में है। मेरे इस ज्ञान को सफल करने के लिये, आप सबका धन्यवाद।

– ओल्ड राजेन्द्र नगर,
नई दिल्ली

मार्च –2015 के आर्थिक सहयोगी

श्री जगदीश सरला चैरिटेबल ट्रस्ट, ग्रीन पार्क, नई दिल्ली	वार्षिक सहयोग	5000/–
श्री वेदरत्न आर्य श्रीमती चन्द्रवती आर्या, मालवीय नगर,	94वें जन्म दिन पर	5000/–
आर्य समाज साकेत, नई दिल्ली	वार्षिक सहायता	4800/–
दयावती नित्यानन्द वनाती न्यास, शालीमार बाग, दिल्ली		4000/–
ई. श्री वेद प्रकाश मुनि जी, आर्य वानप्रस्थाश्रम, ज्वालापुर	वार्षिक सहायता	2400/–
श्री विहारी लाल सतीश कुमार जी, रोहतक रोड़, करोलबाग, नई दिल्ली		1200/–
आर्य समाज इन्दिरा नगर, बगलौर	मासिक	1500/–
आर्य समाज अनारकली, मन्दिर मार्ग नई दिल्ली	मासिक	1000/–
ब्रिगेडियर के.पी. गुप्ता जी, सैक्टर–15, फरीदाबाद	मासिक	1000/–
स्वतन्त्रता सैनानी पु. आनेद मुनि जी, आर्य समाज करडखेल लातूर महा.		600/–
श्री नरेन्द्र मोहन वलेचा जी, महामंत्री शुद्धि सभा	मासिक	500/–
श्रीमती मीना लोधी जी, ग्रा.पो. दौका जिला बुलंदशहर यु.पी.		500/–
ई. श्री विजय कुमार अग्रवाल जी, मित्र विहार पीतमपुरा दिल्ली	आजीवन	300/–
श्री अजयकुमार अग्रवाल जी, सवाना ग्राउन्ड, राजनगर एक्स. गाजियाबाद	आजीवन	300/–

श्री चन्द्रभान चौधरी जी द्वारा एकत्रित दान

कुमारी गरिमा जी, बी–2 ब्लाक पश्चिम विहार, नई दिल्ली	मासिक	1000/–
श्रीमती चन्द्रकला राजपाल जी, पश्चिम विहार, नई दिल्ली	मासिक	500/–
श्री गुलशन जुनेजा जी, जी–ब्लाक विकासपुरी, नई दिल्ली	आजीवन	300/–
श्री ब्रिगेडियर हरीश चन्द्र जी, जी–ब्लाक विकासपुरी, नई दिल्ली	आजीवन	300/–
श्री सूरज प्रकाश आर्य जी, जी–ब्लाक विकासपुरी, नई दिल्ली	आजीवन	300/–
श्रीमती प्रवीण मेंदीरता जी, जी–ब्लाक विकासपुरी, नई दिल्ली	दान	50/–
श्री सौरभ चौधरी, जी–49 विकासपुरी, नई दिल्ली	दान	50/–
श्री सुखदेव महाजन जी, विकासपुरी, नई दिल्ली		50/–
डा. पुष्पलता वर्मा जी, आर्य समाज विकासपुरी, नई दिल्ली		50/–
श्रीमती ऊषा कुकरेजा जी, आर्य समाज विकासपुरी, नई दिल्ली		50/–
श्रीमती संतोष कोछड़ जी, आर्य समाज विकासपुरी, नई दिल्ली		50/–

श्रीमती सावित्री नन्दा जी द्वारा एकत्रित दान

श्रीमती सावित्री नन्दा जी, न्यू राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली	1000/–
श्रीमती पूनम जी ओम कुमार नन्दा जी, न्यू राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली	1000/–
श्रीमती बनिता जी विमल कुमार नन्दा जी, न्यू राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली	1000/–
कु. नम्रता नन्दा जी न्यू राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली	1000/–
श्रीमती मधु नन्दा जी, न्यू राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली	500/–
श्रीमती अंजलि कमल कुमार नन्दा, न्यू राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली	500/–
श्रीमती स्नेह अशोक कुमार ढींगरा जी, वसन्तकुंज	500/–
श्रीमती ज्ञान ढींगरा जी, न्यू राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली	500/–
श्री जयदेव हसीजा जी, आर्य समाज गुड़गांव, हरियाणा	500/–
श्री महावीर जी, आर्य समाज गुड़गांव, हरियाणा	500/–

गुरुकुल विश्वविद्यालय, वृन्दावन (मथुरा) में प्रवेश प्रारम्भ

गुरुकुल विश्वविद्यालय वृन्दावन में प्रवेश प्रारम्भ हो चुके हैं। प्रवेश परीक्षा उत्तीर्ण होने के उपरान्त ही विद्यार्थी को कक्षा 6 एवं 7 में योग्यता अनुसार प्रवेश दिया जा सकता है अथवा जिस विद्यार्थी को अन्य विषयों के साथ- साथ अष्टाध्यागी न्यूनतम 4 अध्याय कण्ठस्थ होगी, वह विद्यार्थी प्रवेश परीक्षा के उत्तीर्ण होने पर कक्षा 8 में भी प्रवेश पा सकता है। गुरुकुलीय परिवेश पूर्णतः वैदिक संस्कारों से परिपूर्ण है, इसके साथ ही भोजन, आवास एवं अध्ययनादि की व्यवस्था भी अति उत्तम है।

–आचार्य हरिप्रकाश (प्राचार्य) मोबाईल : 9457333425, 9837643458

टंकारा में ऋषिबोधोत्सव सहर्षोल्लास सम्पन्न

नारी की उन्नति का श्रेय स्वामी दयानन्द को–श्री ओम प्रकाश कोहली

ऋषि बोधोत्सव उत्साहपूर्वक सम्पन्न हुआ जिसमें ऋग्वेद पारायण यज्ञ उपदेशक विद्यालय के आचार्य रामदेव जी के बह्मत्व में प्रारम्भ हुआ।

दिनांक 16 फरवरी 2015 को उद्घाटन समारोह के रूप में आयोजित किया गया जिसमें श्रीमती एवं श्री एस के शर्मा मुख्य यजमान थे। इस अवसर पर कृषि राज्य मन्त्री श्री मोहन भाई कुण्डारिया पधारे।

दिनांक 17 फरवरी 2015 को पूर्णाहुति पर श्री योगेश मुंजाल, श्री सुधीर मुंजाल, श्रीमती अंजु मुंजाल आदि यजमान उपस्थित थे। पूर्णाहुति के उपरान्त श्री एस के शर्मा द्वारा ध्वजारोहण हुआ।

इस अवसर पर श्री एस के शर्मा ने डी ए वी के प्रधान श्री पूनम सूरी जी द्वारा भेजा गया संदेश पढ़कर सुनाया जिसमें वेदों और सत्यार्थ प्रकाश को जन जन पहुचाने की ओर संगठित रूप से कार्य करने की प्रेरणा दी गई। –रामनाथ सहगल (मंत्री)

thearyasamaj.org

R.N.I. No. 43084/76 Date of Publication 01-4-2015 Delhi Postal R.No. G-3/DL (N) 060/
Posting Date : 2-3 Every Month

सेवा में,

शुद्धि समाचार

अप्रैल – 2015

माता सन्तान की निर्माण शाला है

–डॉ. बिजेन्द्रपाल सिंह (खुर्जा)

ऋषि दयानन्द सरस्वती जी महाराज ने सत्यार्थ प्रकाश के द्वितीय समुल्लास में लिखा है "मातृमान् पितृमान् आर्यवान् पुरुषो वेद"। अर्थात् जब तीन उत्तम शिक्षक अर्थात् एक माता दूसरा पिता और तीसरा आचार्य होवे तभी मनुष्य ज्ञान वान होता है। वह कुल बड़ा भाग्यवान जिसके माता पिता धार्मिक विद्वान हों।

ऋषि दयानन्द लिखते हैं कि जितना माता से सन्तानों को उपदेश और उपकार पहुँचता है उतना किसी से नहीं।

माता राष्ट्र निर्माता है अर्जुन, भीम, राम, कृष्ण, वीरसावरकर महाराणा प्रताप, शिवाजी को महान बनाने वाली माता ही थीं जो कि ज्ञान वान चरित्रवान देश भक्त विद्वान स्त्री थीं ।। मदालसा, कुन्ती, गार्गी, मैत्रेयी, कौशल्या जैसी माताओं ने वीरों को जन्म दिया इसीलिए भारत की यह धरा वीर भूमि कहलाई गई। विश्व में कहीं भी ऐसे वीर नहीं हुए जैसे कि भारत में हुए। दुनियां में ऐसे व्यक्ति तो हुए जिन्होंने अपना साम्राज्य दूर दूर तक बढ़ाया परन्तु वह भारत के वीरों के सामने कहीं भी नहीं ठहरते। भारत में सन्तानों को धर्म की शिक्षा दी जाती है जिसका आरम्भ माता से ही होता है ऐसा अन्यत्र नहीं होता इसीलिए बाहर के लोग अधर्म, छल, कपट, प्रपंच जैसे अधार्मिक अमानवीय कृत्यों हत्या लूट पाट नर संहार, बालकों स्त्रियों के साथ दुराचार के द्वारा दूसरों पर शासन करते आए उन्हें वीर नहीं कहा जा सकता भारत भूमि वीर भोग्या वसुन्धरा इसी लिए कही जाती है यहां जितने भी रणवीर, शूर वीर व योद्धा हुए उन्हें महापुरुष कहा गया वह गुण वान, वेदवान, नीतिवान, ज्ञानवान तथा सत्या चरण वाले हुए हैं।

ऋषि दयानन्द ने सत्यार्थ प्रकाश में प्रथम समुल्लास में ईश्वर के सौ नामों का वर्णन किया है दूसरे में बालकों को शिक्षा, श्रेष्ठता युक्त बालक, माता के कर्त्तव्य, गर्भ से लेकर शिशु के बड़े होने तक की व्यवस्था। माता का भोजन निवास औषधि एवं व्यवहार आदि का वर्णन विस्तृत रूप से किया है माता के स्वास्थ्य का भी पूरा ध्यान रखने को वर्णन किया है। गर्भस्थ शिशु पर माता के आचरण, व्यवहार व भोजन आदि का प्रभाव पड़ता ही है माता जैसा खाएगी उसके गर्भ में स्थित सन्तान के स्वास्थ्य पर वैसा ही प्रभाव पड़ेगा माता जो व्यवहार करेगी, देखना, बात करना, विचार करना, सोचना आदि का बालक के मन पर भी प्रभाव पड़ेगा भले ही वह बीज रूप में पड़े जन्म के पश्चात वही बोए हुए बीज रूप में गुण व्यवहार विचार प्रस्फुटित हो बालक के बड़े होने के साथ दिखाई देने लगते हैं ऋषि दयानन्द ने इसीलिए माता के रख रखाव भोजन व अन्य गुणों का ध्यान रखते हुए लिखा है।

"माता और पिता को अति उचित है कि गर्भाधान के पूर्व मध्य और पश्चात मादक द्रव्य, मछ, दुर्गन्ध, रुक्ष, बुद्धिनाशक पदार्थों को छोड़ के जो शक्ति आरोग्य, बल, बुद्धि पराक्रम और सुशीलता से सम्यता को प्राप्त करें वैसे घृत, दुग्ध, मिष्ट अन्नपान आदि श्रेष्ठ पदार्थों का सेवन करें।"

ऋषि दयानन्द ने यहां श्रेष्ठ सन्तान के निर्माण हेतु वेदोक्त विषयों पर प्रकाश किया यह वही विषय हैं जिन्हें हमारे पूर्वज जानते व आचरण करते थे इसमें माता का सर्वाधिक कार्य है अभिमन्यु को चक्रव्यूह तोड़ने का ज्ञान माता के गर्भ से ही मिला था जन्म के पश्चात् वह माता के ही सान्निध्य में रहा गुरुकुल में शिक्षा प्राप्त की धनुर्विद्या में ज्ञान प्राप्त किया तत्पश्चात् महाभारत युद्ध में वीरता के साथ लड़ा।

सीता को कहते हैं राम ने निकाल दिया था वह बात सत्य नहीं अपितु ऐसा था कि उस वैदिक काल में सभी वैदिक परम्पराओं का निर्वाह किया करते थे उस समय राजा पुरुषों का तथा रानी स्त्रियों का न्याय करती थीं जब सीता गर्भ वती थीं तब उन के मन मष्तिष्क व वातावरण को पवित्र रखने को ऋषि वाल्मीकि के आश्रम में शान्त पवित्र व एकान्त स्थान में भेज दिया था जहां प्रातः सायं अग्नि होत्र व वेद मन्त्रों से उनका वातावरण अच्छा हो राज्य के कार्यों में मष्तिष्क पर सोचने विचारने का कार्य अधिक होता है अशान्ति भी होती है प्रजा के कार्य होते हैं अतः सीता के लिए ऋषि वाल्मीकि का आश्रम श्रेष्ठ स्थान था जहां सीता के भोजन निवास गर्भ सम्बन्धी शिशु की देखभाल का कार्य अच्छी प्रकार हो सकता था व्यवस्था अच्छी थी सुरम्य वातावरण था।

सन्तान की सुशिक्षा भी माता द्वारा ही होती है प्राचीन काल में ऐसी अनेक माताओं के उदाहरण हैं जिन्होंने सुशिक्षा से बालकों को सत्याचारी, देशभक्त, वीर बनाया।

ऋषि दयानन्द का यहां यही उद्देश्य रहा कि हम वेदानुसार संस्कार आदि पर ध्यान देवें तो अब भी श्रेष्ठ सन्तानें हो सकती हैं प्राचीन काल में सन्तान का निर्माण शुभ संस्कार था श्रीकृष्ण रुक्मणी की संतान प्रद्युम्न संस्कार द्वारा ही हुई मदालसा की सन्तानें संस्कार द्वारा महात्मा पुरुष बनीं। यदि आज भी संस्कारों का महत्व समझा जाय और आचरण में लाया जाय तो भीम अर्जुन जैसी सन्तानें हो सकती हैं।

आज का वातावरण पाश्चात्य पूरक हो रहा है घरों में टीवी पर भौडे फूहड़ गाने नाच कूद मार धाड़ हत्या के दृश्य कामुकता के दृश्य इनसे बालकों का मन आरम्भ से ही कुप्रभावित होने लगता है गर्भ में सन्तान पर भी इन चलचित्रों का कुप्रभाव पड़े बिना नहीं रह सकता। विवाह संस्कार जो आज होते हैं उनमें वैदिकता का नाम मात्र को भी प्रभाव नहीं है बारातें चढ़ती है बारातियों की संख्या ही बहुत होती है उधर अधिकतर मद्यपान करते हैं फिर बैण्ड बाजों की धुनों पर कूदना ऐसे ही विवाहोत्सव में डी.जे पर भोडे नृत्य व उछल कूद इनमें कौन सा संस्कार है! जब प्रदक्षिणा होती है वहां अत्यल्प लोग रह जाते हैं सहस्रों व्यक्ति भोजन (दावत) खाकर चले जाते हैं जहां फेरे होते हैं पुरोहित जो पौराणिक होते हैं पौराणिक विधि भी शुद्ध नहीं जानते प्रत्येक ग्राम नगर में प्रदक्षिणाय अथवा विवाह के संस्कारों का नया ही रूप सामने आता है जितने पौराणिक पुरोहित, उतने ही तरीके, भिन्न भिन्न देखने में आते हैं विवाह पश्चात् दूल्हा दुल्हन को हनीमून के लिए माता पिता भेजते हैं जिन विषयों व कर्मों की आवश्यकता है उसे करते नहीं मुख्य विषय है कि माता अपनी सन्तान को श्रेष्ठ आचरण वाली बनाए जब सन्तान श्रेष्ठ होगी तो चोरी, जारी, आलस्य, प्रमाद, मादक द्रव्य, मिथ्या भाषण, हिंसा, क्रूरता, ईर्ष्या, द्वेष, मोह आदि पास भी न आयेंगे। मातृ मान पितृ मान शब्द में माता शब्द सर्वप्रथम आता है अर्थात् सन्तान की शिक्षा जन्म पश्चात माता से ही आरम्भ हो जाती है जन्म से पांचवे वर्ष तक बालक को माता द्वारा शिक्षा दी जाती है छठे वर्ष से आठवें वर्ष तक पिता शिक्षा देवे नौवें वर्ष से ब्राह्मण जो वेद का विद्वान हो बालक का उपनयन कर आचार्य कुल अर्थात् गुरुकुल भेजे।

आज समाज में जो अन्ध विश्वास व पाखण्ड प्रचलित हैं उनके प्रति बालक को सावधान रखना भी आवश्यक है। फलित ज्योतिष, तावीज बनवाना, जन्म पत्री, श्राद्ध कर्म, भूत प्रेत का भ्रम जाल, ग्रहदौष, मजार, कब्रों की पूजा, मूर्ति पूजा आदि न कराऐं। यह पाखण्ड मात्र है अभिमान न करें धन की अधिकता से भी प्रमाद आदि बढ़ जाते हैं।

माता सन्तान की निर्माता है सन्तान अच्छी हों श्रेष्ठ हो समाज में श्रेष्ठता आती है और जब समाज श्रेष्ठ होगा तो श्रेष्ठ अधिकारी कर्मचारी राजनेता होंगे श्रेष्ठ विद्वान होंगे सत्योपदेश होंगे समाज में श्रेष्ठता की लहर वायु की भांति बहती रहेगी राष्ट्र श्रेष्ठ होगा गौरवान्वित होगा।

आओ ऋषि दयानन्द के इस अनमोल वचन को गम्भीरता से लें और माता से लेकर राष्ट्र तक श्रेष्ठता का निर्माण करें।

–मोबाईल 8979794715

मुद्रक, व प्रकाशक – रामनाथ सहगल द्वारा गुरमत प्रिंटिंग प्रेस, 1337, संगतरासन, पहाड़ गंज, नई दिल्ली–55 दूरभाष : 23561625, से मुद्रित एवं भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा, 6949, बिड़ला लाइन दिल्ली–7 दूरभाष : 23847244 से प्रकाशित। सम्पादक : डॉ. कैलाश चन्द्र शास्त्री